अनादि-अनिधन

जिनागम पंथ जयवंत हो

चन्द्रप्रभ दिव्यार्चना

जिनागम पंथ प्रकाशन

जिनागम पंथ ग्रंथमाला : ग्रंथांक–23

(स्वर्णिम विमर्शोत्सव एवं रजत संयमोत्सव वर्ष–2022–24 की मंगल प्रस्तुति)

जिनागम पंथी वंदनीय आचार्य परम्परा

आचार्य भगवन् पूज्यपाद स्वामी जी

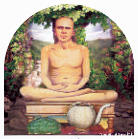

चारित्र चक्रवर्ती मुनि कुञ्जर
आचार्य श्री 108 आदिसागर जी महामुनिराज

तीर्थभक्त शिरोमणि, समाधि सम्राट
आचार्य श्री 108 महावीरकीर्ति जी महामुनिराज

वात्सय रत्नाकर
आचार्य श्री 108 विमलसागर जी महामुनिराज

तपस्वी सम्राट
आचार्य श्री 108 सन्मतिसागर जी महामुनिराज

शुद्धोपयोगी संत आचार्य श्री 108 विरागसागर जी महामुनिराज

प.पू. ''जीवन है पानी की बूँद'' महाकाव्य के मूल रचयिता, ''विमर्श लिपि'' के सृजेता, अहार जी के छोटे बाबा, आदर्श महाकवि, राष्ट्रयोगी, जिनागम पंथ प्रवर्तक

भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज

नमनकर्ता

जिनागम पंथी श्रावक संघ
दिल्ली प्रदेश

जिनागम पंथी श्रावक संघ से जुड़ने के हेतु सम्पर्क करें

मो. 8595818776, 9971857491

श्री चन्द्रप्रभ जिन पूजा

रचयिता–भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

तर्ज–जहाँ डाल–डाल पर सोने की...

हे चन्द्रप्रभ भगवान हृदय से, तुमको हृदय बुलाऊँ।
हे नाथ! हृदय में पाऊँ, हे नाथ! हृदय से ध्याऊँ।
निर्मल भावों से आह्वानन, स्थापन कर पधराऊँ।।हे नाथ...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

मिथ्यात्व मलिनता के कारण, निज ध्रुवस्वरूप न जाना।
हे नाथ! असंयम अनुभव से, चारित्र नहीं पहिचाना—
चारित्र नहीं पहिचाना।।
रत्नत्रय जल से जन्म जरा मृतु तीनों रोग नशाऊँ। हे नाथ...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलम् निर्व. स्वाहा।

चंदन

पर संयोगों की ज्वाला में, झुलसा संताप बढ़ाया।
पर का कर्ता बन–बन करके, उपयोग सदा दहकाया—
उपयोग सदा दहकाया।।
स्वातम शीतलता अनुभव कर संसार ताप विनाशाऊँ। हे नाथ...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत

दिन–रात आस्रव–भावों का, व्यापार बढ़ाता आया।
कर्मोदय–सत्ता के कारण, संसार–पदों को पाया—
संसार–पदों को पाया।।
अविनाशी अक्षय–पद पाने संसारी पद ठुकराऊँ। हे नाथ...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

काषायिक परिणति अनुभव कर, इच्छाओं को उपजाया।
हे नाथ! चार गति चौरासी–लख पर्यायों को पाया—
सब पर्यायों को पाया।।
अकषाय स्वभाव करूँ अनुभव, काषायिक भाव हटाऊँ। हे नाथ...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

हे नाथ! असाता के कारण, नित क्षुधा वेदना पाई।
नहिं जाना भक्ष्य–अभक्ष्य कभी, रसना ने ली अंगड़ाई–
रसना ने ली अंगड़ाई।।
मैं निजरस–स्वादी बनूँ अहा! यह क्षुधारोग विनशाऊँ। हे नाथ...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

मोही बनकर भवसागर की, लहरों पर नित उछला हूँ।
निर्मोह–स्वभाव नहीं जाना, संबंधों में मचला हूँ—
संबंधों में मचला हूँ।।
मोहांधकार हो नाश मेरा, नित यही भावना भाऊँ। हे नाथ...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप

सिद्धों–सा वैभव पाकर भी, निज स्वाभिमान न जाना।
शुभ–अशुभ विभावों को अपना, ऐश्वर्य सदा ही माना—
ऐश्वर्य सदा ही माना।।
आठों कर्मों का दहन करूँ, भगवती–आत्मा ध्याऊँ। हे नाथ...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

हे नाथ! बंध फल में अब तक, रति–अरति भाव उपजाए।
संवर–निर्जरा मोक्षफल के, नहिं उत्तम भाव सुहाए—
नहिं उत्तम भाव सुहाए।।
अब मोक्ष महाफल पाने को, मैं परमसमाधि गाऊँ। हे नाथ...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

हाथों में मंगल द्रव्य लिए, मंगल भावों को लाया।
दो चन्द्रप्रभ भगवान मुझे, जो निज अनर्घपद भाया—
जो निज अनर्घपद भाया।।
वसु मंगल द्रव्य समर्पित कर, शुद्धात्म शिवालय आऊँ। हे नाथ...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

चन्द्रप्रभ गर्भ में आये, उत्सव तिहुँ लोकों छाये।
पंचमी वदि चैत सुहाई, माँ सुलक्षणा हर्षाई।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण पंचम्यां गर्भकल्याणक मंडिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मे त्रिभुवन के स्वामी, वदि पौष इकादशि नामी।
पितु महासेन हर्षाये, इन्द्रादिक शीष नवाये।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण एकादश्यां जन्मकल्याणक मंडिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि पौष ग्यारसी आई, भगवति जिनदीक्षा पाई।
दुर्द्धर तप को स्वीकारा, रागादि भाव निरवारा।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण एकादश्यां तपकल्याणक मंडिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दिन फाल्गुन वदि सप्तमि का, उद्योत ज्ञानरश्मि का।
चउघाति कर्म नशाये, अरिहंत प्रभु कहलाये।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण सप्तम्यां केवलज्ञानकल्याणक मंडिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन सित सप्तमि आई, प्रभु ने भवमुक्ति पाई।
इन्द्रादि महोत्सव कीना, सुख अनुभव नित्य नवीना।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन शुक्ल सप्तम्यां मोक्षकल्याणक मंडिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

चन्द्रप्रभ भगवान के, चरण कमल सिरनाय।
नाथ! आप सम बन सकूँ, भाव हृदय हुलसाय।।

जय-जय-जय अष्टम तीर्थंकर, जय आत्म हितंकर शिवशंकर।
जय करुणासागर भवदुःखहर, जय मुक्ति नागर श्रेयस्कर।।

थी चंद्रपुरी नगरी प्यारी, जहाँ आप हुए प्रभु अवतारी।
इन्द्रों ने किया उत्सव हर्षा, तीनों लोकों में सुख वर्षा।।

आयु दस लाख पूर्व पाई, तन शत-पचास धनु ऊँचाई।
पितु महासेन रोमांच करें, माँ सुलक्षणा उर हर्ष धरें।।

बिजली की चमक दिखी जिस क्षण, वैराग्य हृदय जागा तत्क्षण।
आ देव ऋषि अनुमोद करें, ध्रुव-अध्रुव क्या प्रभु शोध करें।।

यह सब क्षणभंगुर जीवन है, अध्रुव है अहो! विनाशी है।
चैतन्य प्राण से अनुप्राणित, जीवन अखंड अविनाशी है।।

अब नित्य त्रिकाली शुद्ध-बुद्ध, भगवान आत्मा ध्याऊँगा।
जो सिद्ध असंख्य प्रदेश बसा, शरणागत हो प्रगटाऊँगा।।

विमला शिविका पर हो सवार, सर्वार्थ नाम उद्यान गये।
अपराह्न भगवती जिनदीक्षा, संग सहस नृपति मुनिराज भये।।

त्रय दिवस बाद क्षीरान्न लिया, पंचाश्चर्य तव प्रगट हुए।
नृप सोमदत्त गृह तीर्थ हुआ, नलिनापुर वासी धन्य हुए।।

अपराह्न प्रगट कैवल्यज्ञान, छद्मस्थ काल त्रय माह रहा।
जिस-जिसने झेली दिव्यध्वनि, सब भविकों का कल्याण अहा।।

सम्मेदशिखर का ललितकूट, निर्वाण स्थली कहलाता।
निर्वाण मार्ग वह पाता जो, निर्वाण भावना को भाता।।

हे चन्द्रप्रभ भगवान हमें, निर्वाण महापद मिल जाये।
श्री चरणों में कोटि प्रणाम, निज आतम बगिया खिल जाये।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रप्रभ भगवान की, करे भक्ति निज भाव।
शुभ 'विमर्श' शुभ आचरण, मिले मुक्ति की छाँव।।

(परि पुष्पांजलिं क्षिपामि)

श्री चन्द्रप्रभ चालीसा 'तिजारा'

वीतराग सर्वज्ञ जिन, जिनवाणी को ध्याय,
लिखने का साहस करूँ, चालीसा सिर नाय।
देहरे के श्री चन्द्र को, पूजों मन–वच–काय,
रिद्धि सिद्धि मंगल करें, विघ्न दूर हो जाय।।

।। चौपाई ।।

जय श्री चन्द्र दया के सागर, देहरे वाले ज्ञान उजागर।
शांति छवि मूरति अति प्यारी, भेष दिगम्बर धारा भारी।।

नासा पर है दृष्टि तुम्हारी, मोहनी मूरति कितनी प्यारी।
देवों के तुम देव कहावो, कष्ट भक्त के दूर हटावो।।

समन्तभद्र मुनिवर ने ध्याया, पिंडी फटी दर्श तुम पाया।
तुम जग में सर्वज्ञ कहावो, अष्टम तीर्थंकर कहलावो।।

महासेन के राजदुलारे, मात सुलक्षणा के हो प्यारे।
चन्द्रपुरी नगरी अति नामी, जन्म लिया चन्द्रप्रभ स्वामी।।

पौष वदी ग्यारस को जन्मे, नर–नारी हरषे तब मन में।
काम क्रोध तृष्णा दु:खकारी, त्याग सुखद मुनिदीक्षा धारी।।

फाल्गुन वदी सप्तमी भाई, केवलज्ञान हुआ सुखदाई।
फिर सम्मेदशिखर पर जाके, मोक्ष गये प्रभु आप वहाँ से।।

लोभ मोह और छोड़ी माया, तुमने मान कषाय नसाया।
रागी नहीं, नहीं तू द्वेषी, वीतराग तू हित उपदेशी।।

पंचमकाल महा दुखदाई, धर्म–कर्म भूले सब भाई।
अलवर प्रान्त में नगर तिजारा, होय जहाँ पर दर्शन प्यारा।।

उत्तर दिशि से देहरा माहीं, वहाँ आकर प्रभुता प्रगटाई।
सावन सुदी दशमी शुभनामी, आन पधारे त्रिभुवन स्वामी।।

चिह्न चन्द्र का लख नर–नारी, चन्द्रप्रभ की मूरति मानी।
मूर्ति आपकी अति उजियाली, लगता हीरा भी है जाली।।

अतिशय चन्द्रप्रभु का भारी, सुनकर आते यात्री भारी।
फाल्गुन सुदी सप्तमी प्यारी, जुड़ता है मेला यहाँ भारी।।

कहलाने को तो शशिधर हो, तेजपुञ्ज रवि से बढ़कर हो।
नाम तुम्हारा जग में साँचा, ध्यावत भागत भूत पिशाचा।।

राक्षस भूत प्रेत सब भागे, तुम सुमरत भय कभी न लागे।
कीर्ति तुम्हारी है अति प्यारी, गुण गाते नित नर और नारी।।

जिस पर होती कृपा तुम्हारी, संकट झट कटता है भारी।
जो भी जैसी आस लगाता, पूरी उसे तुरत कर पाता।।

दुखिया दर पर जो आते हैं, संकट सब खोकर जाते हैं।
खुला सभी को प्रभु द्वार है, चमत्कार को नमस्कार है।।

अन्धा भी यदि ध्यान लगावे, उसके नेत्र शीघ्र खुल जावे।
बहरा भी सुनने लग जावे, पगले का पागलपन जावे।।

अखंडज्योति का घृत जो लगावे, संकट उसका सब कट जावे।
चरणों की रज अति सुखकारी, दु:ख दरिद्र सब नाशन हारी।।

चालीसा जो मन में ध्यावे, पुत्र पौत्र सब सम्पति पावै।
पार करो दुखियों की नैया, स्वामी तुम बिन नहीं खिवैया।
प्रभु मैं तुमसे कुछ नहीं चाहूँ, दर्श तिहारा निशदिन पाऊँ।।

।। दोहा ।।

करूँ वन्दना आपकी, श्री चन्द्रप्रभ जिनराज।
जंगल में मंगल कियो, रखो 'सुरेश' की लाज।।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमो नम:।

श्री चन्द्रप्रभ जिनस्तवनम्

• आचार्य श्री समन्तभद्र स्वामी

भगवान् के चन्द्रप्रभ नाम की सार्थकता बतलाते हैं—

चन्द्रप्रभं चन्द्र–मरीचि–गौरं चन्द्रं द्वितीयं जगतीव कान्तम्।
वन्देऽभिवन्द्यं महतामृषीन्द्रं जिनं जितस्वान्तकषायबन्धम्।।1।।

अन्वयार्थ—मैं **(चन्द्रमरीचिगौरं)** चन्द्रमा की किरणों के समान गौर वर्ण, **(जगति)** संसार में, **(द्वितीयं चन्द्रं इव कान्तं)** दूसरे चन्द्रमा के समान सुन्दर, **(महतां)** इन्द्र आदि बड़े-बड़े जनों के, **(अभिवन्द्यं)** वन्दनीय, **(ऋषीन्द्रं)** गणधरादि ऋषियों के स्वामी, **(जिनं)** कर्मरूप शत्रुओं को जीतनेवाले और, **(जितस्वान्तकषायबन्धम्)** अपने विकारी भाव स्वरूप कषाय के बन्धन को जीतने वाले, **(चन्द्रप्रभं)** चन्द्रमा के समान कान्ति के धारक चन्द्रप्रभ नामक अष्टम तीर्थंकर को, **(वन्दे)** वन्दना करता हूँ।

चन्द्रप्रभ भगवान् की विशेषता बतलाते हुए कहते हैं—

यस्याङ्गलक्ष्मी–परिवेषभिन्नं, तमस्तमोरेरिव रश्मिभिन्नम्।
ननाश बाह्यं बहु मानसं च, ध्यान–प्रदीपातिशयेन भिन्नम्।।2।।

अन्वयार्थ—**(यस्य)** जिनके, **(अङ्गलक्ष्मी–परिवेषभिन्नं)** शरीर सम्बन्धी दिव्यप्रभा-मण्डल से विदारित, **(बाह्यं)** बाह्य अन्धकार, **(च)** और, **(ध्यान–प्रदीपातिशयेन)** शुक्लध्यानरूपी श्रेष्ठ दीपक के अतिशय से, **(भिन्नं)** विदारित, **(बहु)** बहुत सारा, **(मानसं)** मानसिक अज्ञानान्धकार, **(तमोरेः)** सूर्य की, **(रश्मिभिन्नं)** किरणों से विदारित, **(तमः इव)** अन्धकार के समान, **(ननाश)** नष्ट हो गया था।

अब इस प्रकार के भगवान् के वचन सुनकर प्रतिवादी मद रहित हो गये, यह कहते हैं—

स्वपक्ष–सौस्थित्य–मदावलिप्ता, वाक्सिंहनादैर्विमदा बभूवुः।
प्रवादिनो यस्य मदार्द्रगण्डा, गजा यथा केशरिणो निनादैः।।3।।

अन्वयार्थ—**(यथा)** जिस प्रकार, **(केशरिणः)** सिंह की, **(निनादैः)**

गर्जनाओं से, **(मदार्द्रगण्डाः)** मद से गीले गण्डस्थलों के धारक, **(गजाः)** हाथी, **(विमदाः)** मद से रहित हो जाते हैं, **(तथा)** उसी प्रकार, **(यस्य)** जिनके, **(वाक्सिंहनादैः)** वचनरूप सिंहनादों के द्वारा, **(स्वपक्ष-सौस्थित्य-मदावलिप्ताः)** अपने मत-पक्ष की सुस्थिति के घमण्ड से गर्वीले, **(प्रवादिनः)** प्रवादीजन, **(विमदाः)** गर्व रहित, **(बभूवुः)** हो जाते थे।

भगवान् फिर कैसे हैं? यह बतलाते हैं—

यः सर्वलोके परमेष्ठितायाः, पदं बभूवाद्भुत-कर्मतेजाः।
अनन्तधामाक्षर-विश्वचक्षुः, समस्तदुःखक्षय-शासनश्च॥4॥

अन्वयार्थ—(यः) जो, **(सर्वलोके)** समस्त संसार में, **(परमेष्ठितायाः)** परमाप्तपना के, **(पदं)** स्थान, **(बभूव)** थे, **(अद्भुत-कर्मतेजाः)** तीव्र तपश्चरणरूप कार्य से जिनका तेज अद्भुत-अचिन्त्य था अथवा समस्त प्राणिसमूह को प्रतिबोधित करनेरूप कार्य में जिनका केवलज्ञानरूप तेज आश्चर्यकारक था, **(अनन्त-धामाक्षर-विश्वचक्षुः)** अनन्त केवलज्ञान ही जिनका लोकालोक को प्रकाशित करनेवाला अविनाशी चक्षु था, **(च)** और, **(समस्तदुःखक्षय-शासनः)** जिनका शासन चतुर्गति के दुःखों का क्षय करने वाला था।

चन्द्रप्रभ भगवान् फिर कैसे हैं? यह बतलाते हैं—

स चन्द्रमा भव्यकुमुद्वतीनां, विपन्न-दोषाभ्रकलङ्कलेपः।
व्याकोश-वाङ्न्यायमयूखमालः, पूयात्पवित्रो भगवान्मनो मे॥5॥

अन्वयार्थ—जो, **(भव्यकुमुद्वतीनां चन्द्रमाः)** भव्यजीवरूप कुमुदनियों को विकसित करने के लिए चन्द्रमा हैं, **(विपन्न-दोषाभ्रकलङ्कलेपः)** जिनका रागादि दोषरूप मेघकलङ्क का आवरण नष्ट हो गया है, **(व्याकोश-वाङ्न्याय-मयूखमालः)** जो अत्यन्त स्पष्ट वचनों के न्यायरूप किरणों की माला से युक्त हैं तथा, **(पवित्रः)** कर्ममल से रहित होने के कारण जो अत्यन्त विशुद्ध हैं, **(सः भगवान्)** वे चन्द्रप्रभ भगवान्, **(मे)** मेरे, **(मनः)** मन को, **(पूयात्)** पवित्र करें।

पंच परमेष्ठी आरती

रचयिता – भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

बाजे छम छम छम छमाछम बाजे घुँघरू–बाजे घुँघरू,
हाथों में दीपक लेके आरती करूँ।

पहली आरती अरिहंताणं–2
कर्म घातिया चउ णासाणं–2
चारों गुण पाने गुण वंदना करुँ, हाथों में...।

दूसरी आरति सिरि सिद्धाणं–2
पाने मुक्तिफलं णिव्वाणं–2
आठों गुण पाने गुण वंदना करुँ, हाथों में...।

तीसरी आरति आइरियाणं–2
पंचाचार निपुण समणाणं–2
बोधि गुण पाने गुण वंदना करुँ, हाथों में...।

चौथी आरती उवज्झायाणं–2
पच्चिस गुण धारी अप्पाणं–2
ज्ञान गुण पाने गुण वंदना करुँ, हाथों में...

पाँचवीं आरति सव्वसाहूणं–2
ज्ञान ध्यान तप लीन गुरूणं–2
समता गुण पाने गुण वंदना करुँ, हाथों में...

बाजे छम छम छम छमाछम बाजे घुँघरू–बाजे घुँघरू,
हाथों में दीपक लेके आरती करूँ।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी आरती

ॐ जय चन्द्रप्रभु देवा, स्वामी जय चन्द्रप्रभु देवा।
तुम हो विघ्न-विनाशक, पार करो देवा।।
ॐ जय चन्द्रप्रभु देवा...

मात सुलक्षणा पिता तुम्हारे, महासेन देवा।
चन्द्रपुरी में जन्म लिया है, देवों के देवा।।
ॐ जय चन्द्रप्रभु देवा...

जन्मोत्सव पर प्रभु तिहारे, सुर वन्दन आये।
बाल्य काल की लीला लख-लख, सब ही हर्षाये।।
ॐ जय चन्द्रप्रभु देवा...

राज्यकाल की न्याय-नीति तो, सबके मन भाई।
क्षण-भंगुर जग-जाल जान फिर, आत्मसुध लाई।।
ॐ जय चन्द्रप्रभु देवा...

फाल्गुन वदी सप्तमी को शुभ, केवलज्ञान हुआ।
खुद जिओ और जीने दो सबको, यह सन्देश दिया।।
ॐ जय चन्द्रप्रभु देवा...

अलवर प्रान्त में नगर तिजारा, देहरे में प्रगटे।
दुःख कटे तुम नाम जपत ही, सुख ही सुख मिलते।।
ॐ जय चन्द्रप्रभु देवा...

दीनबन्धु करूणानिधान अब, आया तेरे द्वारे।
जन्म-मरण दुःख हरो सभी का, शरण पड़ा थारे।।
ॐ जय चन्द्रप्रभु देवा...

जानें, क्या है जिनागम पंथ?

● श्रमणाचार्य विमर्शसागर

'जिनागम पंथ' अनादि–अनिधन, विश्व मैत्री, प्रेम, एकता का परम पावन संदेश है, जो तीर्थंकर भगवंत,केवली अरिहन्त, गणधर संत, आचार्य–उपाध्याय–निर्ग्रंथ के मुख से अतीतकाल में कहा गया, वर्तमान में कहा जा रहा है और भविष्यकाल में कहा जायेगा।

अहो! तीर्थंकर जिन की वाणी यानि जिनवाणी, जिनश्रुत, जिनागम और इसमें वर्णित आत्महितकारी पंथ, मार्ग। यही है जिनागम पंथ।

अहो! जिनागम में कथित पंथ अर्थात् मार्ग, यही सच्चा था सच्चा है और सच्चा रहेगा। तीर्थंकर सर्वज्ञ जिन की वाणी ही जिनागम है। और जिनागम में कथित श्रमण–श्रावक धर्म यह पंथ अर्थात् मार्ग है। जो श्रमण–श्रावक धर्म के मार्ग पर चल रहा है वह जिनागम पंथ का पथिक 'जिनागम पंथी' है।

सचमुच जिनागम पंथ शाश्वत था, शाश्वत है, शाश्वत रहेगा। जो जिनागम पंथ का पथिक है वह सम्यग्दृष्टि, श्रावक अथवा श्रमण संज्ञा को प्राप्त जिनागम पंथी है। जो जिनागम पंथ की श्रद्धा से रहित है वह मिथ्यादृष्टि है।

अहो! विदेह क्षेत्र में विराजित विद्यमान बीस तीर्थंकरों के मुख से गणधरादि परमेष्ठी भगवंतों के द्वारा आज भी जिनवाणी, जिनश्रुत, जिनागम प्रगट हो रहा है।

धन्य हैं वे भव्य जीव जो जिनागम कथित समीचीन पंथ अर्थात् जिनागम पंथ को स्वीकार कर अनादि मोह, राग–द्वेष की परम्परा का विच्छेदन कर आत्मकल्याण कर रहे हैं। अहो! जिनागम पंथ के अलावा अन्य कोई कल्याण का मार्ग नहीं है। जिनागम पंथ के अलावा अन्य पंथ उन्मार्ग हैं, अकल्याणकारी हैं।

जयदु जिणागम पंथो, रागद्दोसप्प णासगो सेयो।
पंथो तेरह – बीसो, रागादि – वड्ढिओ असेयो।।

जो रागद्वेष का नाश करनेवाला है, कल्याणकारी है, ऐसा 'जिनागम पंथ जयवंत हो'। इसके अलावा तेरह पंथ, बीसपंथ आदि पंथ, रागद्वेष को बढ़ानेवाले हैं, अकल्याणकारी हैं।

अहो! कालदोष के कारण कतिपय विद्वानों ने तीर्थंकर जिनदेव के मुख से भाषित अर्थात् सर्वांग से खिरनेवाली दिव्यध्वनि में कथित जिनागम पंथ से बाह्य तेरहपंथ, बीसपंथ, शुद्ध तेरहपंथ आदि नाना पंथों की संज्ञाएँ रखकर परस्पर रागद्वेष को जन्म दिया है। कुछ विद्वान एवं श्रमण संज्ञा से भूषित जीवों ने भी ख्याति–पूजा–लाभ के लिए नये–नये पंथ गढ़कर भव्य जीवों का महान् अहित किया है।

अहो! अज्ञानता, आज ये जीव इन नाना संज्ञाओं से पंथों का पोषणकर जिनागम पंथ से दूर खड़े हो गये हैं। और कल्पित पंथों का पोषणकर अपना आत्म पतन ही कर रहे हैं। तेरह–बीस आदि संज्ञाएँ जिनेन्द्र देव की वाणी से बाह्य हैं। ये जिनागम पंथ से बाह्य पंथ ही वर्तमान में राग–द्वेष का कारण बने हुये हैं। चारों तरफ समाज में विघटन, मंदिरों में खींचतान, इन कल्पित तेरह–बीस आदि पंथों की ही देन है। जिनागम पंथ सभी को एक सूत्र में बाँधकर मैत्री–प्रेम–वात्सल्य का संदेश देता है।

अहो! आज भी यदि स्वकल्पित पंथों का दुराग्रह छोड़कर सब जीव जिनेन्द्र देव की वाणी यानि जिनवाणी, जिनागम में श्रद्धा रखें और जिनागम वर्णित पंथ यानि 'जिनागम पंथ' को सच्ची श्रद्धा से स्वीकारें, तो सर्व समाज में आज भी एकता का सूत्रपात हो सकता है। आपस के रागद्वेष मिट सकते हैं और जिनशासन गौरवान्वित हो सकता है।

'जयदु जिणागम पंथो।'

'जिनागम पंथ जयवंत हो।'

TODAY SOLUTION

अपने स्वाध्याय से संबंधित, समसामयिक और अपने मन में उठने वाले प्रश्नों के आगम के आलोक में यथार्थ समाधान प्राप्त करें।
आप अपने प्रश्न 9639559074 पर भेज सकते हैं।
लाइव देखने के लिए Jinagam Panth Channle Subscribe करें।

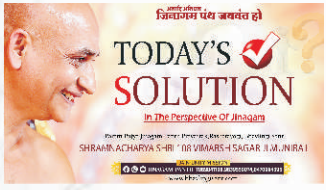

हजारों छंदों में निबद्ध सर्वाधिक लोकप्रिय रचना

जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य)

मूल रचयिता –भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

जीवन है पानी की बूँद, कब मिट जाये रे–ऽऽ
होनी–अनहोनी, हो–हो–2-कब क्या घट जाये रे ऽऽ

साथ निभायेगा बेटा, सोच रहा लेटा–लेटा।
हाय बुढ़ापा आयेगा, पास न आयेगा बेटा।
ख्वाबों में तू क्यों, हो–हो–2 आनन्द मनाये रे ऽऽ

अर्द्धमृतकसम वृद्धापन, झुकी कमर सिकुड़न–सिकुड़न।
गोदी में पोता–पोती, खोज रहा बचपन यौवन।
बीते जीवन के, हो–हो–2 तू गीत सुनाये रे ऽऽ

हाथों में लकड़ी थामी, चाल हो गई मस्तानी।
यम के घर खुद जाने की, जैसे मन में हो ठानी।
बेटा बहु सोचें, हो हो–2 डोकरो कब मर जाये रे ऽऽ

चारपाई पर लेटा है, पास न बेटी–बेटा है।
चिल्लाता है पानी दो, कोई न पानी देता है।
भूखा प्यासा ही, हो–हो–2 इक दिन मर जाये रे ऽऽ

जीवन बीता अरहट में, पुण्य–पाप की करवट में।
चढ़कर अर्थी पर जाये, अन्त समय भी मरघट में।
तेरा ही बेटा, हो–हो–2 तेरा कफन सजाये रे ऽऽ

सिर पर जिसे बिठाया है, गोदी में भी खिलाया है।
लाड़ प्यार से पाला है, सुख की नींद सुलाया है।
तेरा ही बेटा, हो–हो–2 तुझे आग लगाये रे ऽऽ

जिसके लिए कमाता है, जीवन साथी बताता है।
जिसकी चिन्ता कर करके, अपना चैन गँवाता है।
देहरी से बाहर, हो–हो–2 वो साथ न जाये रे ऽऽ

जिनवाणी स्तुति

रचयिता –भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

माँ–ओ माँ, माँ–ओ माँ–2
भव सागर से तारण हारी, ओ जिनवाणी माँ–2
तू है हमको सबसे प्यारी, ओ जिनवाणी माँ
माँ–ओ माँ, माँ–ओ माँ–2

शरणा में तेरी, जो भी आता है
सच्ची सुखशान्ति, वो नर पाता है
खुशियाँ मिलती हैं, जीवन में हरपल
यादें रहती हैं, चेतन की पलपल
भव–भव में भी हो उपकारी, ओ जिनवाणी माँ–2
तू है हमको सबसे प्यारी, ओ जिनवाणी माँ
माँ–ओ माँ, माँ–ओ माँ–2

सात तत्त्व, छह द्रव्य, महिमा बतलाती
तू ज्ञायक प्रभु है, हमको सिखलाती
बंध–आत्मा में, अन्तर बतलाया
भेदज्ञान करना, हमको सिखलाया
बना दिया आत्मविहारी, ओ जिनवाणी माँ
तू है हमको सबसे प्यारी, ओ जिनवाणी माँ
माँ–ओ माँ, माँ–ओ माँ–2

आतम अनुभव की लोरी गाती हो
जन्म जरा मृत्यु, रोग नशाती हो
माँ जग में तुझ सा, कोई न हितकारी
वीतराग विज्ञान तेरी बलिहारी
तीर्थंकर मुख से अवतारी, ओ जिनवाणी माँ
तू है हमको सबसे प्यारी, ओ जिनवाणी माँ
माँ–ओ माँ, माँ–ओ माँ–2

परिचय की वीथिकाओं में

आदर्श महाकवि, भावलिंगी संत
श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

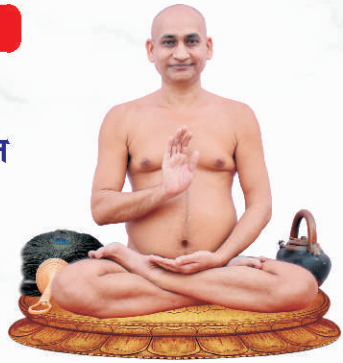

पूर्व नाम	:	श्री राकेश कुमार जैन
पिता	:	पं. श्री सनत कुमार जैन (दो प्रतिमाधारी, समाधिस्थ)
माता	:	श्रीमती भगवती जैन (आपके ही कर कमलों से दीक्षित एवं समाधिस्थ पू.आर्यिका विहान्तश्री माताजी)
जन्म स्थान	:	जतारा, जिला-टीकमगढ़ (म.प्र.)
जन्म तिथि	:	मार्गशीर्ष कृष्णा पंचमी सं. 2030
जन्म दिनांक	:	15 नवम्बर, 1973 दिन : गुरुवार
शिक्षा	:	बी.एस.सी. (बायलॉजी)
भ्राता	:	दो (अग्रज-राजेश जैन, अनुज-चक्रेश जैन)
भगिनी	:	दो (अग्रजा-श्रीमती कमला जैन, अनुजा-बा.ब्र. महिमा दीदी (संघस्थ)
विवाह	:	बाल ब्रह्मचारी
ब्रह्मचर्य व्रत	:	27 फरवरी 1995 (सिद्धक्षेत्र अहार जी)
सामायिक प्रतिमा	:	03 अगस्त 1995 (क्षेत्रपाल जी ललितपुर (उ.प्र.)
ऐलक दीक्षा	:	23 फरवरी 1996, फाल्गुन शु.पं.सं. 2052, देवेन्द्रनगर (म.प्र.)
मुनि दीक्षा	:	14 दिसम्बर 1998, पौष कृष्णा 11, सं. 2055, बरासोजी भिण्ड (म.प्र.)
आचार्य पद घोषित	:	13 फरवरी 2005, कुंथुगिरी
आचार्य पद संस्कार	:	12 दिसम्बर, 2010, मार्गशीर्ष शु. स, सं. 2067, बाँसवाड़ा (राज.)
दीक्षा गुरु	:	प.पू. सूरिगच्छाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज

भावलिंगी संत : एक नजर

* प.पू. भावलिंगी संत, राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज एक ऐसे दिगम्बराचार्य हैं जिन्होंने पंथवाद के नाम पर बिखरती जैन समाज में अनादि–अनिधन 'जिनागम पंथ' का उद्घोष कर सामाजिक एकता का सूत्रपात किया है।
* जिनको सिद्धक्षेत्र अहार जी में अपनी निर्मल साधना से पंचमकाल में दुर्लभतम शान्तिभक्ति की महान् सिद्धि प्राप्त हुई, यक्षों द्वारा की गई महापूजा और नाम दिया 'भावलिंगी संत' एवं 'अहार जी के छोटे बाबा'।
* आचार्य भगवन् अमितगति स्वामी के 1000 वर्ष प्राचीन ''श्री योगसार प्राभृत'' ग्रन्थ पर पूज्य गुरुदेव द्वारा प्राकृत भाषा में 'अप्पोदया'/'आत्मोदया' नामक वृहद टीका का सृजन किया गया है जो अपने आप में अनूठा इतिहास है।
* धर्म निरपेक्ष रूप से सम्पूर्ण भारत वर्ष में गुनगुनाई जाने वाली कालजयी रचना 'जीवन है पानी की बूँद' महाकाव्य के पूज्य श्री मूल रचनाकार हैं। इस कृति में गुरुदेव द्वारा अभी तक अभी तक हजारों छंदों का सृजन किया गया है। गुरुदेव की इस कृति पर अनेक साधु–साध्वियों द्वारा नये–नये छंद जोड़े गये।
* पूज्य भावलिंगी संत आचार्य श्री विमर्शसागर जी ऐसे प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य हैं जिनकी रचना 'देश और धर्म के लिए जिओ' को मध्यप्रदेश सरकार द्वारा कक्षा 11 की हिन्दी सामान्य की पुस्तक 'मकरंद' में एवं एक सुखद अनुभूतियों का एहसास–माँ यह रचना कक्षा 8 की एटग्रेड अभ्यास पुस्तिका 'भाषा भारती' में प्रकाशित किया गया है।
* प.पू. भावलिंगी संत ऐसे प्रथम जैनाचार्य हैं जिन्होंने मौलिक रूप से पूर्णता नवीन 'विमर्श एम्बिसा' भाषा का सृजन कर समस्त भाषा मनीषियों को प्रभावित किया है।
* पूज्य गुरुदेव ऐसे प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य हैं जिन्होंने अशोकनगर (म.प्र.) सन् 2011 में मौलिक रूप से 'विमर्श लिपि' का सृजन किया है।
* देश की राष्ट्रवादी संस्था 'भारत विकास परिषद्' शाखा बिजयनगर (राज.) द्वारा गुरुदेव को 'राष्ट्रयोगी' अलंकरण से अलंकृत किया गया।

वर्तमान श्रमण संस्था में पूज्य गुरुदेव के संघ का अनुशासन प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है।

अतिशयकारी गुरु मंत्र

संकट मोचन तारण हारे , गुरु विमर्श की जय जय जय।

प्रतिदिन भावशुद्धि पूर्वक एक जाप अवश्य करें।

Scan to read Gurudev's Litrature

प.पू. आचार्य संघ की समस्त जानकारी प्राप्त करने के लिये पर हमारे जिनागम पंथ चैनल को Subscribe, Follow, Like करें...

सच्चे जैन का एक ही पंथ-जिनागम पंथ
जयदु जिणागम पंथो
जिनागम पंथ जयवंत हो

जिनागम पंथ प्रकाशन

...शास्त्र विक्रय... ज्ञानावरणस्यास्रवा:
शास्त्र विक्रय ज्ञानावरण कर्म के आस्रव का कारण है।
(आचार्य अकलंक देव, राजवार्तिक)

NOT FOR SALE